ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

कृषि मौसम विज्ञान विभाग
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, राँची

AMFU, Ranchi
Ref.: 7/2 (54) AAS/Ranchi
Mob.: 9340446914

IMD, New Delhi
Date: 07.07.2026
Email: amfuranchi@gmail.com

मौसम खेती परामर्श बुलेटिन **बोकारो** जिले के लिए

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त अगले पाँच दिनों (07 जुलाई से 11 जुलाई) का मौसम पूर्वानुमान

	07 जुलाई	08 जुलाई	09 जुलाई	10 जुलाई	11 जुलाई
वर्षा (मिलीमीटर)	34.0	12.0	13.0	12.0	12.0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.)	31	33	34	34	33
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.)	24	25	26	26	26
आकाश में बादल की स्थिति	बादल छाए रहेंगे	बादल छाए रहेंगे	बादल छाए रहेंगे	बादल छाए रहेंगे	बादल छाए रहेंगे
सापेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	62-87	58-82	55-80	54-79	60-79
हवा की गति (कि. मी. प्रति घंटा)	4	3	3	3	3
हवा की दिशा	दक्षिण की ओर से	दक्षिण की ओर से	दक्षिण-पश्चिम की ओर से	दक्षिण-पश्चिम की ओर से	दक्षिण-पश्चिम की ओर से

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह

मौसम ठंडा एवं अत्यधिक नम बना रहेगा, लगातार मध्यम से भारी वर्षा के कारण अधिकतम तापमान में ख़ास बदलाव के आसार नहीं है। भारी वर्षा, गरज-चमक और तेज हवाओं के कारण मौसम अस्थिर बना रहेगा।	
पिछले दिनों हुई वर्षा तथा आने वाले दिनों में भी वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाई किसी भी फसल की बुवाई से पहले जल निकासी सुनिश्चित करें तभी बुवाई के लिए जाएँ। धान के फसल को छोड़कर अन्य सभी फसल की बोआई मेढ़ बनाकर ही करें। रोपा धान वाले खेतों में जल जमाव के लिए मेढ़ को दुरुस्त रखें तथा विभिन्न सब्जियों एवं फसलों के खेतों से समुचित जल निकास के लिए व्यवस्था बनाए रखें। खड़ी फसलों में सिंचाई रोक दें और जल निकासी की सुविधा रखें। मौसम साफ होने तक खाद या कीटनाशकों का छिड़काव रोक दें। वर्षा जल संचयन के लिए अपने खेत के निचले भाग में छोटे -छोटे गड्ढे (डोभा) का निर्माण करें।	
अरहर	अरहर की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। बीज किसी प्रमाणित श्रोत से ही खरीदें। बीजों को बोने से पहले अरहर के लिए उपयुक्त राईजोवियम तथा फास्फोरस में घुलनशील बैक्टीरिया से उपचार करें तथा अच्छे अंकुरण के लिए खेत में पर्याप्त नमी होनी आवश्यक है। इस उपचार से बीजों के अंकुरण तथा उत्पादन में वृद्धि होती है। अरहर की उन्नत किस्में – एल.आर.जी.-41, बिरसा अरहर-1, नरेन्द्र अरहर-1 एवं 2, बहार, आई.सी.पी.एच.-2671 इनमे से किसी एक किस्म का चुनाव करें।
धान	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे 20-25 दिन पुराने धान के पौधों को 20 x 10 (आर x पी) सेमी के अंतर पर तैयार खेतों में रोपें। नाइट्रोजन 100 किग्रा./हेक्टेयर, फॉस्फोरस 60 किग्रा./हेक्टेयर, पोटाश 40 किग्रा./हेक्टेयर और जिंक सल्फेट 25 किग्रा./हेक्टेयर रोपाई से पहले इस्तेमाल करें। जिन धान के खेतों में पानी भरा हुआ है, उनमें एक पैकेट/एकड़ नील हरित शैवाल (बीजीए) डालें, क्योंकि यह नाइट्रोजन का समृद्ध स्रोत है। मौजूदा मौसम की स्थिति धान की नर्सरी में धान के ब्लास्ट और जीवाणुजनित पत्ती झुलसा रोग के संक्रमण का कारण बन सकती है। यदि नर्सरी में लीफ ब्लास्ट दिखाई देता है, तो टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25% WG @ 0.4 ग्राम या आइसोप्रोथिओलेन 40EC @ 1.5 मिली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें। 7-10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव दोहराएं। बीच-बीच में सूखा और गीला मौसम, जल्दी बोई गई नर्सरी में बीएलबी के प्रकोप के लिए अनुकूल है। रोग के प्रसार को रोकने के लिए प्लांटोमाइसिन @1.0 ग्राम/लीटर के साथ हेज़क्साकोनाज़ोल @1.5 मिली/लीटर का पत्तियों पर छिड़काव करें।
मक्का	मिट्टी में मौजूद नमी का इस्तेमाल करके बुवाई का काम पूरा करें और यह पक्का करें कि पानी की निकासी ठीक हो ताकि जड़ों के आस पास पानी जमा न हो। फॉल आर्मीवर्म के प्रकोप पर नज़र रखें; पौधों के ऊपरी हिस्सों की नियमित रूप से जाँच करें। बारिश के बाद निराई - गुड़ाई से जुड़े ज़रूरी काम और खरपतवार हटाने का काम करें। नाइट्रोजन का टॉप ड्रेसिंग तभी करें जब मिट्टी में पर्याप्त नमी हो।
सब्जी	जून-जुलाई में टमाटर की नर्सरी में पौध लगाने का सबसे अच्छा समय होता है। बीज को ट्राइकोडर्मा विरिडे @ 4 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें। बीज को बोने से 24 घंटे पहले बीज उपचारित करना चाहिए। उन्नत किस्में – स्वर्ण लालिमा, अर्का आभा, स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, पूसा संकर-1, सुरक्षा। टमाटर, बैंगन तथा मिर्च के फसल जो 35 से 40 दिन पुराने हो उनमे निकाई - गुड़ाई कर खरपतवार नियंत्रण करें। पिछली बारिश के कारण मिर्च और बैंगन में फल सड़न का संक्रमण होने की संभावना है, यदि ऐसा हो तो कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 2 ग्राम/लीटर पानी या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 3 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें। यदि आवश्यक हो तो 15 दिनों के अंतराल पर दूसरा और तीसरा छिड़काव करें।
पशुपालन	जुगाली करने वाले पशुओं को नयी घास चरने से गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल नेमाटोड बीमारी की संभावना रहती है जिसमे एनीमिया और दस्त जैसे गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। इसके लिए फेनबेन्डाज़ोल 5 से 10 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम वज़न के हिसाब से पशुओं को दें।
मडुआ	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे 3 सप्ताह पुरानी रागी की फसल की रोपाई करें। रोपाई से पहले जल निकासी की सुविधा सुनिश्चित करें। कतार से कतार की दुरी 30 सेंटीमीटर तथा पौध से पौध की दुरी 10 सेंटीमीटर रखें।

अनुराग सनाडया
रिसर्च एसोसिएट

डॉ. रमेश कुमार
नोडल आफिसर